Dr. Chitra Kumari

Q 1. समुदाय एवं समिति में अन्तर बताइये।

Ans – समिति तथा समुदाय में अंतर

	समिति	समुदाय
[1]	समिति की सदस्यता ऐच्छिक होती है	[1] जबकि समुदाय की सदस्यता अनिवार्य होती है।
[2]	समिति की स्थापना जानबूझकर विचारपूर्वक की जाती है।	[2] समुदाय का विकास अपने आप अर्थात् स्वतः होता है।
[3]	समिति के कुछ विशिष्ट पूर्व निश्चित उद्देश्य होते हैं।	[3] समुदाय सामान्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है।
[4]	समिति अस्थायी होती है	[4] समुदाय स्थायी होता है।
[5]	समिति के लिए निश्चित भू भाग की विशेष आवश्यकता नही होती	[5] जबकि समुदाय के लिए निश्चित भू-भाग का होना अति आवश्यक है।
[6]	समिति में सामुदायिक भावना होना आवश्यक नहीं है।	[6] समुदाय की मुख्य विशेषता सामुदायिक भावना का होना आवश्यक है।
[7]	एक व्यक्ति एक समय में एक से अधिक समितियों का सदस्य हो सकता है	[7] जबकि एक व्यक्ति एक ही समुदाय का सदस्य हो सकता है।
[8]	समिति के अन्तर्गत कुछ विशेष नियमों का होना आवश्यक है।	[8] समुदाय में सामान्यतः नियम व रीति-रिवाज होते है।

Q. 2. सामाजिक समूह को परिभाषित करते हुए सामाजिक समूह का वर्गीकरण कीजिए।

Ans – सामाजिक समूह का परिभाषा —

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार " समूह से मेरा तात्पर्य मनुष्यों के उस संकलन से है जो एक दूसरे के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं"

यागबर्न और निमकाफ के शब्दों में " जब कभी दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।"

वोगार्डस के अनुसार " सामाजिक समूह का अर्थ हम ऐसे व्यक्तियों की संख्या से लगा सकते हैं जिनकी सामान्य रुचियाँ एवं स्वार्थ होते हैं जो एक दूसरे को प्रेरित करते हैं, जो सामान्य रूप से एक दूसरे के प्रति वफादार होते हैं और सामान्य कार्यों में भाग लेते हैं।

समनर का वर्गीकरण

समनर ने सदस्यों के व्यवहारों पर आधारित समूह को दो भागों में बांटा है —

1 अन्तः समूह — अन्तः समूह शब्द का प्रयोग प्रथम बार समनर ने अपनी पुस्तक FOLKWAYS 1906 में किया।
अन्तः समूह के सदस्य उस समूह के बीच अत्यधिक हम की भावना तथा सहानुभूति पायी जाती है अपनत्व की यह भावना बहुत कुछ आमने - सामने के सम्बन्धों द्वारा भी प्रभावित होती है और जैसे - जैसे प्रत्यक्ष सम्बन्धों में दूरी आती जाती है

अन्तः समूह की भावना भी शिथिल पड़ती जाती है। अन्तः समूह के सदस्य सदैव यह विश्वास करते हैं कि उनका व्यक्तिगत कल्याण समूह के सभी सदस्यों के कल्याण में निहित तथा उनके हित और अन्य सदस्यों के हित समान हैं।
अन्तः समूह में व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति को सर्वोच्च मानता है, अपने देश की प्रथाओं, परम्पराओं, भाषा धर्म, लोकाचारों व साहित्य को सबसे सुन्दर और मौलिक समझता है। इसी भावना के कारण व्यक्ति अपने अन्तः समूह के सदस्यों को न्यायपूर्ण और सुसंस्कृत प्रमाणित करता है जबकि अन्य समूहों के सदस्यों को कम न्यायपूर्ण और कभी-कभी असभ्य में भी संकोच नहीं करता है

[2] बाह्य समूह — यह समूह दूसरों का समूह है। उसके प्रति न तो हम की भावना होती है और न सहयोग व सहानुभूति की। उसके सुख-दुख के साथ व्यक्ति का कोई भी सम्बन्ध नहीं होता। बाह्य समूह के प्रति व्यक्ति का व्यवहार पक्षपातपूर्ण, विरोधी यहाँ तक कि घृणात्मक भी हो सकता है। जैसे जब हम यह कहते हैं कि वह अंग्रेज हब्सी तथा मद्दी है तब हमारा दृष्टिकोण अधिकतर सामाजिक दूरी का होता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए हम आदरपूर्ण शब्दों का प्रयोग न करके विदेशी असभ्य जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। अपने ही देश में हम कहते हैं कि वे रूढ़िवादी हैं अन्धविश्वासी व अप्रगतिशील हैं। बाह्य समूह के सदस्यों के प्रति व्यंग्य और घृणा का प्रदर्शन करते हैं ऐसे में कुछ व्यक्ति सामाजिक दूरी का अनुभव करते हैं तब ऐसे व्यक्तियों के समूह को बाह्य समूह के नाम से जाना जाता है।